श्री हनुमान चालीसा

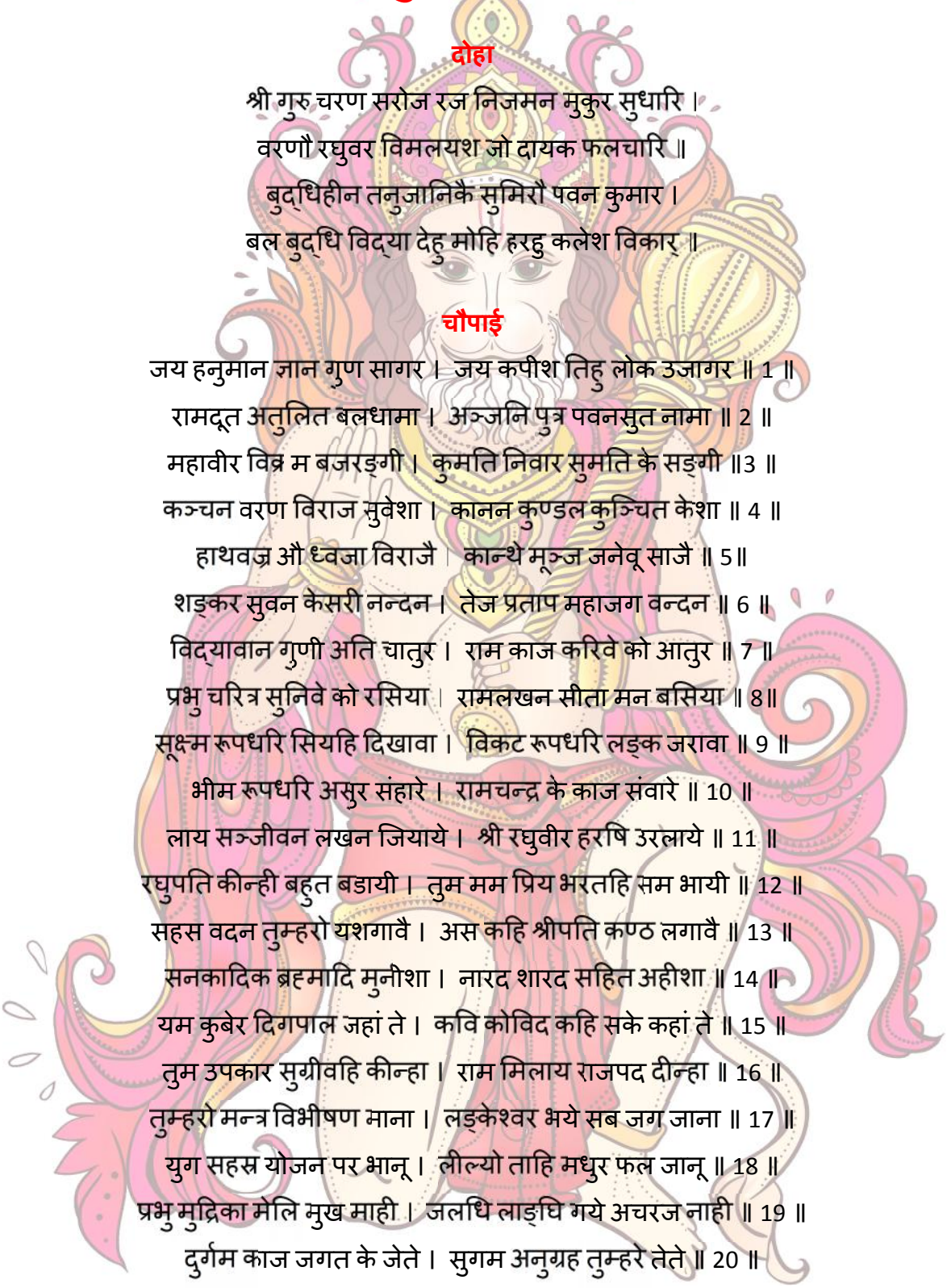

दोहा

श्री गुरु चरण सरोज रज निजमन मुकुर सुधारि ।
वरणौ रघुवर विमलयश जो दायक फलचारि ॥
बुद्धिहीन तनुजानिकै सुमिरौ पवन कुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि हरहु कलेश विकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर । जय कपीश तिहु लोक उजागर ॥ 1 ॥
रामदूत अतुलित बलधामा । अञ्जनि पुत्र पवनसुत नामा ॥ 2 ॥
महावीर विक्र म बजरङ्गी । कुमति निवार सुमति के सङ्गी ॥3 ॥
कञ्चन वरण विराज सुवेशा । कानन कुण्डल कुञ्चित केशा ॥ 4 ॥
हाथवज्र औ ध्वजा विराजै । कान्थे मूञ्ज जनेवू साजै ॥ 5॥
शङ्कर सुवन केसरी नन्दन । तेज प्रताप महाजग वन्दन ॥ 6 ॥
विद्यावान गुणी अति चातुर । राम काज करिवे को आतुर ॥ 7 ॥
प्रभु चरित्र सुनिवे को रसिया । रामलखन सीता मन बसिया ॥ 8॥
सूक्ष्म रूपधरि सियहि दिखावा । विकट रूपधरि लङ्क जरावा ॥ 9 ॥
भीम रूपधरि असुर संहारे । रामचन्द्र के काज संवारे ॥ 10 ॥
लाय सञ्जीवन लखन जियाये । श्री रघुवीर हरषि उरलाये ॥ 11 ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बडायी । तुम मम प्रिय भरतहि सम भायी ॥ 12 ॥
सहस वदन तुम्हरो यशगावै । अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावै ॥ 13 ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा । नारद शारद सहित अहीशा ॥ 14 ॥
यम कुबेर दिगपाल जहां ते । कवि कोविद कहि सके कहां ते ॥ 15 ॥
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा । राम मिलाय राजपद दीन्हा ॥ 16 ॥
तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना । लङ्केश्वर भये सब जग जाना ॥ 17 ॥
युग सहस्र योजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥ 18 ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही । जलधि लाङ्घि गये अचरज नाही ॥ 19 ॥
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ 20 ॥

राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥ 21 ॥

सब सुख लहै तुम्हारी शरणा । तुम रक्षक काहू को डर ना ॥ 22 ॥

आपन तेज तुम्हारो आपै । तीनों लोक हाङ्क ते काम्पै ॥ 23 ॥

भूत पिशाच निकट नहि आवै । महवीर जब नाम सुनावै ॥ 24 ॥

नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरन्तर हनुमत वीरा ॥ 25 ॥

सङ्कट सें हनुमान छुडावै । मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥ 26 ॥

सब पर राम तपस्वी राजा । तिनके काज सकल तुम साजा ॥ 27 ॥

और मनोरध जो कोयि लावै । तासु अमित जीवन फल पावै ॥ 28 ॥

चारो युग परिताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥ 29 ॥

साधु सन्त के तुम रखवारे । असुर निकन्दन राम दुलारे ॥ 30 ॥

अष्ठसिद्धि नव निधि के दाता । अस वर दीन्ह जानकी माता ॥ 31 ॥

राम रसायन तुम्हारे पासा । साद रहो रघुपति के दासा ॥ 32 ॥

तुम्हरे भजन रामको पावै । जन्म जन्म के दुख बिसरावै ॥ 33 ॥

अन्त काल रघुवर पुरजायी । जहां जन्म हरिभक्त कहायी ॥ 34 ॥

और देवता चित्त न धरयी । हनुमत सेयि सर्व सुख करयी ॥ 35 ॥

सङ्कट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बल वीरा ॥ 36 ॥

जै जै जै हनुमान गोसायी । कृपा करो गुरुदेव की नायी ॥ 37 ॥

जो शत वार पाठ कर कोयी । छूटहि बन्दि महा सुख होयी ॥ 38 ॥

जो यह पडै हनुमान चालीसा । होय सिद्धि साखी गौरीशा ॥ 39 ॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥ 40 ॥

दोहा

पवन तनय सङ्कट हरण – मङ्गल मूरति रूप् ।

राम लखन सीता सहित - हृदय बसहु सुरभूप् ॥